Dr Tapati Mukherjee.
Associate Prof.
H.O.D in Music
R. M. College. S.D.S.

राग दरबारी कान्हड़ा

"मृदु गनी धमौ रिन्यु
तीव्रोऽशः पसहाचकः
गान्धारोदोलनं चात्र कर्णाटः
स निशि स्मृतः ॥"

परिचय — सुप्रसिद्ध राग दरबारी रचना "आसावरी" थाट से मानी गई है। इस राग में गांधार (ग) धैवत (ध) तथा निषाद (नि) स्वर समूह सर्वदा कोमल प्रयोग होता है, इस राग की जाति वक्र-सम्पूर्ण है, वादी स्वर रिषभ (रे) तथा सम्वादी स्वर पंचम है, इस राग का गायन-समय मध्य रात्रि है तथा इस राग की प्रकृति गम्भीर है।

इस राग का मुख्य चलन मन्द्र तथा मध्य स्थान पे है। आरोह में गांधार दुर्बल है, जल्द तथा सरल तानों में इस स्वर को छोड़ ही देते हैं, अवरोह में धैवत वर्जित करते हैं। कहा जाता है कि इस राग को मियां तानसेन ने प्रचलित किया के। वाके अकबर-बादशाह को प्रसन्न किये थे। इस राग में निषाद और पंचम की संगत बहुत सुन्दर दिखाई देती है।

आरोह — नि़ सा रे ग़ रे सा, म प ध़ नि सां
अवरोह — सां ध़ नि प म प ग़ म रे सा —
पकड़ — ग़ ऽ ऽ ऽ ऽ रे रे सा ध़ नि़ सा, रे सा।

आलाप — ध़ --- नि़ --- ध़ नि़ सा ---, रे रे ऽ ऽ रे सा
ग ऽ म रे ऽ ऽ ऽ — — — प, म प ध़ ध़ नि ऽ प ऽ
म प ध़ नि — — . . रें सां नि सां रें सा ध़ ऽ ऽ
ऽ नि ऽ ऽ प म प ग — रे ---- प --- ग ऽ ऽ म रे
सा।

(1) दरबारी कानाड़ा तथा अड़ाना दोनो रागो की उत्पत्ति आसावरी थाट से हुई है,

(2) दोनों रागों मे गांधार, धैवत तथा निषाद स्वर कोमल प्रयोग होता है,

(3) दोनों ही कान्हड़ा का एक रूप है।

(4) दोनो रागो मे गंधार तथा धैवत स्वर वक्र प्रयोग होता है।

विभिन्नता

दरबारी	अड़ाना
(1) दरबारी गंभीर प्रकृति की राग है,	जबकि अड़ाना के प्रकृति-चंचल है।
(2) दरबारी की चलन मन्द्र तथा मध्य सप्तक के पूर्वार्ध मे होता है। इसलिए राग दरबारी को पूर्वांग प्रधान राग कहा जाता है, जिसके कारण कुछ गायकों का कहना है कि दरबारी मन्द्र और मध्य सप्तक को देखते है।	राग अड़ाना के चलन मध्य सप्तक के उत्तरार्ध तथा तार सप्तक मे अधिक होता है। जिसके कारण इसे उत्तरांग प्रधान राग कहा जाता है।

Scanned with CamScanner

राग – दरबारी स्वरलिपि

1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16

रे रे सा रे नि सा रे रे
औ ऽ गु रु कृ पा ऽ क

ग ग ग गम | रे रे सासा | म म प प मप निसां सांसां
रे ऽ ऽ ऽऽ | मो ऽ पे ऽ | की ऽ टिक पाऽ ऽऽ पं क |

म ग ग गम | रे रे सा सा |
टे ले प ल | छिन मैं ऽ |

अन्तरा

| म म प प धध निनि
गु रु की ऽ मो हि मो ऽ

सांसांसांसां | रें नि सा – | नि सां रें रें | गं मं रें सां
हरि गोऽ | भा ऽ री ऽ | वे ऽ दे पु | रा ऽऽ नो ऽ

निनि सा रें ध नि प प | रे रे सा – | मप निसां सांसां
मनहीं वि चा ऽऽ री ऽ | वे ऽ दो ऽ | ग्याऽ ऽऽ सक र

रे रे सा सा
गग गम
टेले पल | छिन मोऽ